भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 18 अंक : 11 | रविवार, 26.11.1995 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मप्रवाह

दैवी और आसुरी बुद्धि

अनेक प्रकार की बुद्धि प्रत्येक व्यक्ति के कर्त्तव्यभाव में कुछ अनोखा अपनापन दिखाई पड़ता है और जीवन के प्रवाह में उसका अनोखा प्रभाव पड़ता है। यह सभी की जानकारी में आती भी है। अनादिकाल से गीताजी में जैसे वर्णन किया हुआ है वैसे–दैवी और आसुरी सम्पत्ति का आधार अपनी-अपनी बुद्धि पर आधारित है और जैसे संस्कार वैसे शुभ आशीर्वाद संतों द्वारा प्राप्त होते हैं तथा निर्दोषबुद्धि दृढ़ होते ही संत की कृपा होने पर स्वयं के दोषों, विकारों, सूक्ष्म अहंता भरे रवैये, झूठ, मान, ईर्ष्यारूपी आसुरभाव मूर्तिमान दिखाई पड़ने पर उन्हें दूर करने का बल मिलता है। सच्चे संत केवल करुणा करके हमारे कांटे बोने के बावजूद भी आम का रस देते हैं और सभी अनर्थ-सूली का दुःख कांटे द्वारा टले-यूं इसी जीवन में ही सौ-सौ जन्मों की कसर देह रहते ही भक्तिसहित भगवान की भक्ति करवा कर टाल देते हैं। इसमें मूलतत्व निर्दोष बुद्धि ही विशेष कलाकारी अदा करती है। क्योंकि समस्त जीवन का मूल कल्पना पर आधारित है, जिसका आधार प्राणवायु के योग द्वारा चेतनतत्व पर आधारित है और वह चेतना बुद्धि में व्यापकरूप से अखंडित रहती है। यूं श्रीजी महाराज ने जीव का स्वरूप और सभानता की पहचान, बुद्धि की सभानता द्वारा जीव को भी सभानता आ गई, इस तरह अनुभव ज्ञान दिया है। इसे संत द्वारा सब को प्राप्त कर लेना है। हमारी बुद्धि में ही कल्पना रही है; निर्णयों और स्मृति में ही सभी दोषों–काम, क्रोध, ईर्ष्या, कपट वगैरह एक रस हो गए हैं, जिससे भिन्न-भिन्न प्रसंगों, परिस्थिति में हमारी मान्यताएं जैसी दृढ़ होती हैं, उसके मुताबिक ही प्रकृति, स्वभाव काम करते हैं और बुद्धितत्व के अनेक स्वरूप का कर्तव्यरूप में आधार दिखाई पड़ता है। जैसे कि निश्चयात्मकपन, व्यवसयात्मकबुद्धि, शापितबुद्धि, गुणबुद्धि, निर्दोषबुद्धि, दिव्यबुद्धि, व्यवहारिकबुद्धि, कुशाग्रबुद्धि वगैरह अनेक प्रकार का उसके कार्यों द्वारा पता चलता है।

श्रीजी महाराज ने ब्रह्म की जिज्ञासा वाले और उसके स्वरूप को पहचानने वाले या संत की सेवा करने वाले को ही कुशाग्रबुद्धि पाया हुआ बताया है और व्यवहारिकबुद्धि चाहे कितने बड़प्पन, मान, सत्ता, सामर्थ्य, बख्शने वाली हो तो भी मोक्ष मार्ग में, संत की सेवा में जो निर्णय, ज्ञान, काम में नहीं आया, वह निरर्थक ही है, ऐसा स्पष्टरूप से सभी शास्त्रों में बताया है। सो भले कैसे ही संस्कार हों, तो भी प्रगट संतों की सेवा और स्वधर्मयुक्त महाराज के आसरे रहकर श्रीजी की भक्ति कर लेने की आदत डालनी, जिससे कि जीव सत्संगी हो जाए।

सूक्ष्म ज्ञानमार्ग में श्रीजी महाराज ने एक बड़ी से बड़ी बात रखी है कि भजन तो सभी करते हैं लेकिन भगवान जिससे वश हो जाते हैं–सरलता से प्राप्त होते हैं ऐसा 'सच्चा समागम' या सत्पुरुष का संग या 'सत्संग' निर्दोषबुद्धि से होता नहीं–फलस्वरूप अंतःकरण जीता नहीं जा सकता और ऐसी दिव्य भावना के सिवा की भक्ति सगुण कहलाती है तथा अन्तर में सुख-शांति या आनंद की प्राप्ति करा नहीं सकती। सत्पुरुष का प्रसंग तो खूब करते हैं, सेवाएं भी होती हैं, तब भी वह देहात्मबद्धियुक्त सत्संग दूसरों के आकार–दोष और दूसरों की क्रिया देखने की झंझट में डाल देता है–जिससे अंतर में रहते अंतर्यामी से दूर हो जाते हैं और उसे ही असन्तोष, अतृप्ति, सूक्ष्म आसक्तियाँ, दृढ़ हुई मान्यताएं क्लेश खड़ा करती हैं। सो अति सच्चे भाव से ही सत्पुरुष का समागम करना जिससे ऐसी माहात्मयज्ञान से युक्त भक्ति द्वारा बुद्धि में फर्क पड़ जाएगा और शुभ ही संकल्प उठेंगे तथा अच्छे सत्कर्म हुआ ही करेंगे, जिससे अंतर में निरंतर शांति रहेगी।

संक्षेप में सभी विचार, भावनाएं और वृत्तियों के स्थूल आकार भी होते हैं और उसे हाथ-पांव भी हों सो अन्य के हृदयों के ऊपर असर

करते हैं। बुरे विचार, बुरे संकल्प हमें, अन्य को व हमारी भविष्य की प्रजा को भी दुःखरूप ही बनता है क्योंकि ऐसी सम्पत्ति आसुरीभाव के संस्कार वारसे में बालकों में उत्पन्न करते हैं और बुरी आदतें डलती जाती हैं जो बाद में जड़ बन जाती हैं और खूब प्रयास करने पर भी छूटती नहीं। अतः सत्संग करते-करते शुभ ही भावना और विचार दृढ़ करने की लगन रखनी, भीतर में ऐसे शब्द गहराई में उतार कर विचारना, धारना और अमल में लाने का प्रयत्न करना और तब ही मन-बुद्धि और चित्त में जड़ से रूपान्तर होता जाएगा। इसकी प्रतीति अच्छी आदतों और शुभ भावनाओं के रूप में अन्यों को भी लगेगी ही। ऐसी समता और सुहृदभाव वाला सत्संग ही सच्चा गुणातीतज्ञान दृढ़ कराके श्रीजी महाराज की मूर्ति का दिव्य सुख प्राप्त करा सकेगा।

परम भागवत् प्रगट संतवर्य श्री योगीजी महाराज द्वारा सत्संगीमात्र को ऐसी निर्दोषबुद्धि दृढ़ हो यही अभ्यर्थना है। सच्चे संत के गुणगान गाने और हरिभक्त के गुण देखने तथा सेवा करा करनी जिससे दिव्यबुद्धि, निर्दोषबुद्धि दृढ़ होगी और स्वयं का ही दोष देखकर अखंड अंतर्दृष्टि रखकर जाग्रतता से ही भजन करा करना, जिससे धाम का निर्गुण सुख देह रहते ही प्राप्त होगा। संतों और हरिभक्तों के गुणगान गाने में ही जीवन ब्रह्मरूप हो जाता है। यूं सरलता से ऐसी बड़ी पदवी-एकांतिकभाव सिद्ध करके प्रगट संत द्वारा सभी प्राप्त करलें ऐसी नम्र प्रार्थना है। ब्रह्मरूप होकर स्वामिजी-गुरुहरि योगीजी महाराज का भजन करना। वह शिक्षापत्री श्लोक 121 के मुताबिक युक्ति है। ऐसा आत्यंतिक कल्याण देह रहते ही प्रगट संत द्वारा सभी दृढ़ कर लेना।

प.पू. काकाजी महाराज, मई, 1956

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ

अन्नकूट – महाभोग

सभी को ज्ञात है कि दीवापली के पर्व के दूसरे दिन अनिर्देश-मंदिर में हर वर्ष ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट-महाभोग लगाया जाता है, पर इस वर्ष दीपावली के दूसरे दिन सूर्यग्रहण के कारण 25 अक्टूबर भैय्यादूज के दिन अन्नकूट-महाभोग लगाया गया...

इस दिन सर्वप्रथम तो नए वर्ष निमित्त पू. गुरुजी ने आरती प्रारंभ होने से पहले सभा में बात करते हुए कहा–**'पू. काकाजी ने किसी को कुछ भी देने में कसर रखी नहीं है। जो कुछ भी हमें चाहिए-तन, मन, धन, आत्मा से सुखी होने सब कुछ दिया है। समुद्र में पानी की कमी नहीं है, पर हमारी जितनी गुंजाईश होती है उतना ही हम ले पाते हैं। अब हम कटोरी भरे या दूसरा कोई घड़ा भरे, जितनी जिसकी बरकत और लेने की पात्रता कितनी है... हमें कैसे चलना है, कहां हमारी गाड़ी रुकी है वह ख्याल भी देते हैं। पर तब भी हम समझते नहीं... पू. काकाजी को स्थूलरूप से शरीर छोड़े दस वर्ष पूरे हो गये... पू. काकाजी हर पल रक्षा करते हैं, सूझ देते हैं.... वे स्थूलरूप में थे, वैसे ही अब भी प्रगट ही हैं... हमारे चैतन्य का process भी वैसा ही चल रहा है... जैसे स्थूल शरीर से हमारे पीछे पड़े थे, वैसे ही अब भी हैं.. जहां हम पुकार करेंगे, वहां वे प्रार्थना सुनेंगे ही.. अपनी उमंग-लगन-भक्ति भी उन्हें राजी करने की बढ़ रही है। बस अब तो चल पड़ना है, उन्हें पा लेना है.... कई बार रोना भी निकल आता है कि अभी तक क्यों नहीं हम पू. काकाजी को पा पाए? इसकी वजह संग है। इसी कारण प्रगति नहीं होती.. देहभाव में चले जाते हैं। हम सेवा भी खूब करते हैं, पर कोल्हू के बैल की तरह अपनी प्रकृति में रहकर करते हैं.. हम साधु के साथ चिपके हैं पर हमारा मुंह विषय की ओर रहता है। इसलिए साधु के गुण हम में आ नहीं पाते.. प्रभु का ही instrument बन जाएं.... हमारा उठना-बैठना, बोलना उसी के मुताबिक... वे हमें use करें.....'**

सभा में बात करते हुए पू. गुरुजी ने बम्बई-ताड़देव के नवयोगेश्वरों द्वारा नए वर्ष के निमित्त भेजा संदेश पढ़वाया और साथ ही शिकागो से पू. दिनकरभाई द्वारा भेजा संदेश भी सभा में पढ़वाया कि–

'हे भगवान स्वामिनारायण, हे गुणातीतानंदस्वामी,
हे गुरुदेव, हे प्रभु के साक्षात् स्वरूपों,
हमारे गुनाह माफ करना,
आपकी इच्छा मुताबिक आसानी से वर्ताना,
सब को सुखी-सुखी करना,
सब को बल, बुद्धि और प्रेरणा देना,
आपकी निष्ठा के बल से हमें
काल, कर्म और माया के पाश से रहित बनाना
भगवान के भक्तों में निर्दोषबुद्धि सहज रखवाना,
यही नए वर्ष के लिए आपके चरणों में हमारी प्रार्थना है।'

सभा के पश्चात् सभी अन्नकूट आरती के लिए ठाकुरजी के पास एकत्रित हुए... दो दिन लगातार परिश्रम करके पू. स्नेहलस्वामी व उनके साथियों ने मिल कर अन्नकूट का खूब आकर्षक सुशोभन करा था–आज श्रीजी महाराज भी जैसे भक्तों को दर्शन का सुख देने अलौकिक तेज मनमोहकरूप धारण किए थे.. मारवाड़ी प्रकार की पाग श्रीजी महाराज पर खूभ शोभती थी.. श्रीजी महाराज को देखते रहने का ही मन हुआ करता था। दिव्य पवित्र वातावरण की महक हर एक के मन को अनोखा आनंद दे रही थी। हरिभक्तों भावपूर्ण हृदय से अपने घरों से दस-दस व्यंजन बना कर लाए थे। करीब 490 प्रकार के व्यंजन ठाकुर जी के समक्ष भोग के लिए रखे थे....

सर्वप्रथम पू. राकेशभाई व पू. ऋषि ने ठाकुरजी का थाल गाकर आवाहन किया और फिर पू. गुरुजी, पू. भाईस्वामिजी, प.भ. मल्कानी साहेब व अन्य हरिभक्तों ने ठाकुरजी की आरती करी.. इस दिन सभी

को श्रीजी महाराज के अनोखे-अद्‌भुत रूप में दर्शन हुए... सभी को ऐसा प्रतीत होता था कि मानो श्रीजी महाराज ने आज खूब अच्छी तरह सभी हरिभक्तों की भावना ग्रहण करी हो। श्रीजी महाराज के मुख पर अनोखी लालिमा थी....

आरती के बाद सभी ने महाभोग का प्रसाद लिया.. और शाम तक पू. गुरुजी के सान्निध्य में रहकर आनंदोत्सव किया।

✡✡✡

भक्तिपूर्ण अस्थि विसर्जन

हम सभी को मालूम है कि हम सभी की दिव्य माँ–सारे गुणातीत समाज की चैतन्यजननी–प.पू. सोनाबा ने 21.1.95 की सुबह स्थूलरूप से हम सब के बीच में से विदाई ली... पिछले कई समय से प.पू. बा का अस्थि विसर्जन हरिद्वार में करने की तिथि निश्चित करने का प्रोग्राम चल रहा था.. प.पू. पप्पाजी ने 4 और 5 नवम्बर-शनिवार तथा रविवार के मंगलकारी दिन निश्चित किए... प.पू. पप्पाजी विद्यानगर से पू. ज्योति बहन, पू. तारा बहन, पू. हंसा दीदी, भगवाधारी बहनों व करीब 300 हरिभक्तों को लेकर पधारे.. बम्बई से पू. मम्मी बा, पू. योगिनी बहन, साधक बहनें, ताड़देव के नवयोगेश्वरों में से पू. राजुभाई भट्ट, पू. राजुभाई ठक्कर इत्यादि युवकों, माणावदर से पू. हरिभाई साहेब, ब्रह्मज्योति से प.पू. साहेब, दिल्ली से पू. गुरुजी, संतमंडल व हरिभक्तों–इस प्रकार सारा गुणातीत समाज हरिद्वार में इकट्ठा हो गया.. यू–प.पू. बा ने सभी गुणातीत स्वरूपों और मुक्तों को जो निश्चल प्रेम दिया उसका ऋण अदा करने, भक्ति अदा करने की भावना से 4 नवम्बर '95को शाम तक सब हरिद्वार पहुंच गए।

5 नवम्बर की सुबह सप्तसरोवर के नजदीक सदानंदघाट पर सुबह महापूजा का आयोजन रखा था... गुणातीत समाज की चारों पंखुड़ियों–गृहस्थों, संतों, युवकों, बहनें महापूजा में विराजमान थे.. पू. इलेशभाई ने भावपूर्ण हृदय से महापूजा सम्पन्न करी.... दिव्य वातावरण की सुवास चारों ओर अनुभव हो रही थी। महापूजा सम्पन्न होने पर प.पू. पप्पाजी ने आशीर्वाद बरसाते हुए बात करी–**'पू. बा ने चैतन्य मां बनकर एक-एक सत्संगी से लगाव किया। सभी ने बा का प्रेम पाया... और पू. बा का संदेशा दुनिया भर में पहुंचाने के लिए हरिद्वार में अब परम पवित्र-पतित पावनी गंगा में अस्थि पधरायेंगे। त्रिवेणी संगम में भी पधराई हैं। 80 वर्ष तक पू. बा ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज, पू. काकाजी और सभी गुणातीत स्वरूपों में एक ही भाव से जुड़े रहे और उनमें लयलीन होकर उनका रोम-रोम गुणातीतभाव को पा गया। उस बा की अस्थि गुणातीत भाव को पा गई... चैतन्यरूप बन गई। हम सब उनके संबंध से पा गए और समग्र में संस्कार डले, उस भावना से गंगाजी में पधरा रहे हैं। जिससे वह बंगाल के उपसागर में जाएगी और वहां से महासागर में पशु-पक्षी सभी को संस्कार पड़ेंगे.. सभी को अक्षरधाम की सभा मनाई जाए यही अंतर की प्रार्थना और आशीर्वाद...'**

प.पू. पप्पाजी के बाद प.पू. साहेब ने पू. बा को श्रद्धांजली देते हुए बात करी–**'सारे गुणातीत समाज का representation यहां है, बा हम सब की चैतन्य मां थी... उनके प्रेम से, संबंध से हमारी साधना सरल बनी।'**

प.पू. साहेब के पश्चात् पू. गुरुजी ने प.पू. बा के प्रति भावपूर्ण हृदय से श्रद्धांजली व्यक्त करी–**'जैसे कि पू. पप्पाजी ने बताया कि हमने पू. बा को गुणातीत समाज में बांध रखा था... अब पू. बा का अस्थि विसर्जन करेंगे तो उसके द्वारा इलाहाबाद में, बंगाल, में महासागर में मिल जायेगी–तो जिस जिसको उसका tuch होगा वो उसी भाव को पा जायेगा। पू. पप्पाजी के प्रति जो प्यार है, इस कारण हमें वो बात मीठी लगी... पर भीतर में झांक कर देखो कि क्या यह बात सच में मनाई जाती है? या खाली गरदन ही हिलाई है। सो पू. बा की जो महिमा, पू. पप्पाजी ने कही वो हमारे भीतर में ठहरे.... पू. बा की अस्थि यहां गंगाजी में विसर्जित करेंगे, वह महासागर में मिलने से उनके स्पर्श को जो पाएगा वह तर जाएगा– अब यह बात दिल में मनाई जाए.....'**

बाद में पू. हरिभाई साहेब ने व आचार्य रामदेवजी ने पू.बा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करी... सभा के समापन पर प.पू. पप्पाजी द्वारा लिखित संकल्प पू. इलेशभाई ने सभी मुक्तों को कराया–

'हे महाराज ! हे स्वामी ! हे प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों ! आज हम गुणातीत समाज के अक्षरमुक्त सदानंद घाट पर, पवित्र पावन गंगा तट पर प.पू. सोनाबा की अस्थि की पूजा करके महापूजा में संकल्प कर रहे हैं। हे बा ! अक्षरधाम में रहते हुए अब आप हम पर ऐसी कृपा करना कि हमें पृथ्वी पर के धाम, धामी, मुक्तों का यथार्थ माहात्म्य समझ आए और व्यापक में योगीबापा को देखने, अनुभव करते हो जाएं। निर्दोषबुद्धि सभी में रहे ऐसी कृपा करना।'

फिर प.पू. पप्पाजी, प.पू. साहेब, पू. हरिभाई साहेब, पू. गुरुजी स्वरूपों नें प.पू. बा के अस्थि कुंभ का पूजन किया। दूसरी ओर पू. ज्योति बहन, पू. तारा बहन, पू. हंसा दीदी, पू. मम्मी बा, पू. योगिनी बहन इत्यादि बड़ी बहनों ने प.पू. बा की अस्थि कुंभ का पूजन किया। सबसे पहले प.पू. साहेब, पू. हरिभाई साहेब, पू. गुरुजी-संतमंडल ने प.पू. बा की अस्थि विसर्जित करी और फिर पू. ज्योति बहन, पू. तारा बहन, पू. हंसा दीदी इत्यादि ने प.पू. बा की अस्थि विसर्जित करी... **'सोनाबा अमर रहो'** के ब्रह्मनाद से सारा वातावरण गूंज उठा था और साथ ही गंगाजी में प.पू. बा की अस्थि विसर्जित करते हुए सभी की आंखों में पानी था।

महापूजा के पश्चात् दोपहर को प्रसाद लेने के बाद सभी दिल्ली आने हरिद्वार से रवाना हो गए।

✡

✡ प.पू. गुरुजी को एक अत्यधिक शुभ संकल्प उठा कि अनिर्देश में बने प.पू. काकाजी के समाधि स्थान 'स्मृति स्थल' में गुरुहरि प.पू. पप्पाजी के वरद् हस्थों द्वारा प.पू. बा का अस्थिकुंभ रखवायें.... प.पू. काकाजी के मासिक स्मृति दिन 7 नवम्बर 1995 की शाम को प.पू. पप्पाजी, संतों, युवकों पू. हरिभाई साहेब, बहनों, गृहस्थों से प.पू. बा के अस्थिकुंभ का पूजन कराके प.पू. काकाजी की समाधि में उनके अस्थिकुंभ के साथ पधराया। **'सोना बा अमर रहो'** के दिव्यनाद से आकाश गूंज उठा.... इसके पश्चात् प.पू. पप्पाजी, संतमंडल ने समाधि स्थान

की परिक्रमा की.... भाईयों के परिक्रमा करने के बाद पू. ज्योति बहन, पू. तारा बहन व सभी बहनों ने परिक्रमा की...

इस कार्यक्रम के बाद सभी ऊपर ठाकुरजी की आरती के लिए गए और फिर प.पू. काकाजी के स्मृति दिन निमित्त भजन संध्या व सभा की शुरुआत हुई.... विद्यानगर से पू. इलेशभाई, बम्बई से प.भ. हितेशभाई, दिल्ले से प.भ. मंजुल साहेब, प.भ. राकेशभाई, प.भ. सुबोधभाई, पू. ऋषिभाई, लुधियाना के प.भ. विनोदभाई ने भक्तिपूर्ण हृदय से भजन गाए और सभी को दिव्यानंद में भावविभोर कर दिया।

प.पू. हरिभाई साहेब ने समाधि स्थान में रखी प.पू. बा के अस्थिकुंभ की महिमा का अद्‌भुत दर्शन कराते हुए कहा कि–**'अब से यह समाधि स्थान double force में कार्य करेगा। अभाव, अवगुण में कभी नहीं पड़ना- no entry ही कर देना... इससे power discharge होती है।'**

फिर प.पू. पप्पाजी ने आशीष प्रदान किए–**'दुनिया में अपने जैसा कोई भाग्यशाली नहीं... गुणातीत स्वरूपों ने केवल संबंध ही देखा। आज प.पू. काकाजी के समाधि स्थान में प.पू. बा की अस्थि रखी.... अब समाधि स्थान में double force से काम होगा। प.पू. काकाजी हमें निराधार नहीं कर गए... सारा गुणातीत समाज प.पू. काकाजी, पू. बा का है। जो गुण प.पू. काकाजी में थे, वे सभी गुरुजी में दिखाई पड़ते हैं... गुरुजी के पास heart & head बंद रखना। प्रत्यक्ष स्वरुप जो भी कार्य उठाये, उसमें लय व लीन होकर लग पड़ना। गुरुजी की अनुवृत्या भक्ति करते हो जाएं।'**

प.पू. पप्पाजी की आशीष वर्षा के बाद सभी दिव्य स्मृतियों की पूंजी लेकर, प्रसाद लेकर धन्य हुए....

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

461. जिसे उत्तम निर्विकल्प निश्चय हो, उसे कुछ करना नहीं रहता। *प्र.-5,270*

462. स्वयं की ताकत से तो जीव विषय से अलग हो ही नहीं सकता। जितना विषय छोड़ने जाए-उतना दुगुना बंध जाए। हां, बड़े साधु द्वारा तो विषय से अलग हुआ जा सकता है। वहां दुष्टांत दिया कि दूध और पानी किसी तरह पृथक् नहीं हो पाता लेकिन हंस द्वारा पृथक हो सकता है।

प्र.-5,271

463. ऐसी बात स्वयं के मन में समझ कर रखना और किसी को कहनी-करनी ही नहीं। हां, बहुत आग्रह हो उसे करनी और मितभाषी बनना। यह जो मूर्ति दिखाई देती है, ऐसी की ऐसी मूर्ति अक्षरधाम में है, तनिक भी फर्क नहीं। उसमें तेज ज्यादा दिखाई देता है, इतना ही फर्क है। यह प्रगट मूर्ति जो दिखाई देती है वही मूर्ति अक्षरधाम में है, यूं समझने में जितनी कसर है इतनी कसर है। सो दिव्यभाव, मनुष्यभाव एक समझना, तो पूरा हो जायेगा। दूसरा तो उसके पीछे अपने आप समझ जाएगा।

प्र.-5,273

464. व्यवहार है सो सब करना पर मन से उससे अलग रहना। धृतराष्ट्र और भीम मिले ऐसा लगाव देह से व्यवहार में रखना, क्षत्रिय जैसा लगाव रखना। मन और जीव से पृथक रहना। उसमें जो जुड़ने बाधा हो उसका त्याग करना। व्यवहार में हर्ष-शोक हो, वही माया का रूप है। देह से राज करना लेकिन जीवन तो भगवान में ही जोड़ देना। मैं भगवान का हूँ और भगवान मेरे हैं, यूं जीव जोड़ देना। भजन कम हो, कीर्तन कम गाए जाएं उसकी फिक्र नहीं।

प्र.-5,274

465. स्वयं के कल्याण में दृष्टि बराबर रखनी और दूसरे का कल्याण जैसा-तैसा करना।

प्र.-5,275

466. पढ़ाई करनी वह तो बुद्धि आने के लिए–सत्संग में रहने के लिए तथा उम्र काटने के लिए है।

प्र.-5,276

467. भगवान ने कर्म का एक कुठार खोल कर आधा कुठार विषय का किया है और आधे कुठार की इन्द्रियां बनाई हैं। यूं वे सजाति हैं, सो उनकी एकता हो जाती है और जीव तो उससे पृथक-विजाति है, से उसमें रसरूप नहीं होता।

प्र.-5,277

468. रूपराम ठाकर ब्राह्मण को खाना नहीं खिलता, पर हरिजन सत्संगी को खिलाता।

प्र.-5,278

व्रतोत्सवसूची

1) दि. 2.12.95 शनिवार एकादशी, व्रत
2) दि. 17.12.95 रविवार धनुर्मास प्रारंभ
3) दि. 18.12.95 सोमवार एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'ANIRDESH' Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053